

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

जैन कला के विविध तत्व

डॉ. कविता सिंह

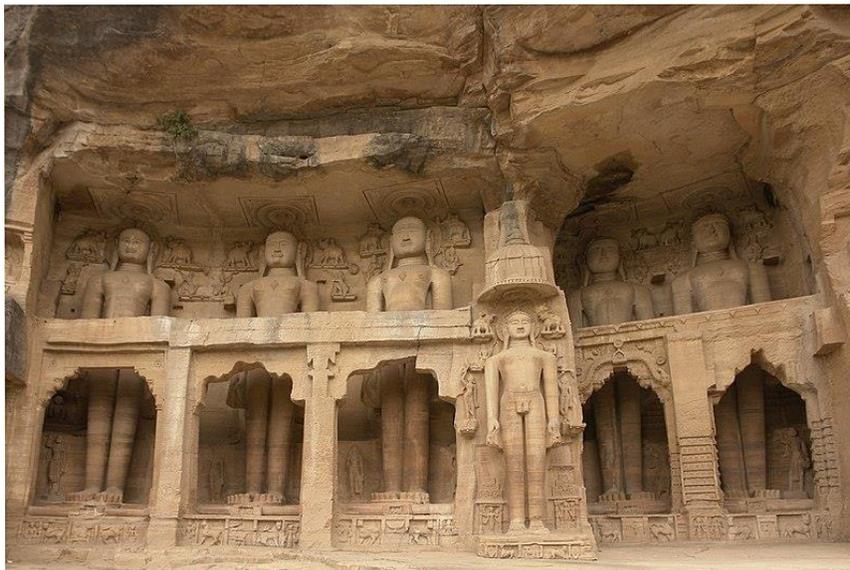
असोशिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या

सार

जैन कला जैन धर्म के साथ जुड़े कला के धार्मिक कार्यों को संदर्भित करता है। भले ही जैन धर्म केवल भारत के कुछ हिस्सों में फैला है, इसने भारतीय कला और वास्तुकला में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सामान्य रूप से जैन कला भारतीय बौद्ध और हिंदू कला की समकालीन शैली का व्यापक रूप से अनुसरण करती है।, हालांकि आइकनोग्राफी, और मंदिर की इमारतों का कार्यात्मक लेआउट, विशिष्ट जैन जरूरतों को दर्शाता है। अधिकांश जैन कला का निर्माण करने वाले कलाकार और शिल्पकार शायद खुद जैन नहीं थे, लेकिन स्थानीय कार्यशालाओं से सभी धर्मों के संरक्षक थे। यह सचित्र पांडुलिपियों के लिए मामला नहीं हो सकता है, जहां कई सबसे पुराने भारतीय जीवित जैन हैं। जैन मुख्य रूप से दर्शाते हैं तीर्थकर या बैठे या खड़े ध्यान मुद्रा में अन्य महत्वपूर्ण लोग, कभी-कभी बहुत बड़े पैमाने पर। यक्ष और यक्षिणी, परिचारक आत्माएं जो तीर्थकर की रक्षा करती हैं, आमतौर पर उनके साथ दिखाई जाती हैं।

परिचय

तीर्थकर या जीना का प्रतिनिधित्व या तो कमल की स्थिति (पद्मासन) में किया गया है या ध्यान में खड़े खड़गसाना (कायोत्सर्ग) आसन। यह उत्तरार्द्ध, जो सेना के समान है ध्यान में खड़ा है एक लंबी अवधि के लिए धारण करने के लिए एक कठिन आसन है, और जैनियों के लिए आकर्षण है कि यह शरीर के संपर्क में न्यूनतम मात्रा को कम कर देता है पृथ्वी, और इस पर या उस पर रहने वाले भावुक प्राणियों के लिए एक जोखिम पैदा करना। [1,2]



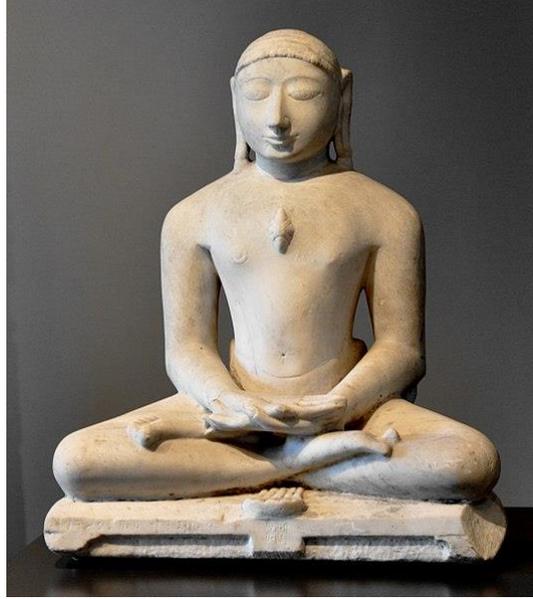
International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

यदि बैठा है, तो उन्हें आमतौर पर उनके पैरों के सामने बैठा हुआ चित्रित किया जाता है, एक पैर के पैर दूसरे के घुटने के करीब आराम करते हैं, और दाहिने हाथ को गोद में बाईं ओर लेटा हुआ है। तीर्थकर चित्र करते हैं। विशिष्ट चेहरे की विशेषताएं, कपड़े या (अधिकतर) हेयर-स्टाइल नहीं हैं, और पार्श्वनाथ को छोड़कर प्रत्येक तीर्थकर से संबंधित प्रतीक या प्रतीक (लिंचना) के आधार पर विभेदित किया जाता है। पार्श्वनाथ की मूर्तियों के सिर पर एक सांप का मुकुट है। पहले तीर्थकर ऋषभ को अपने कंधों पर गिरने वाले बालों के ताले द्वारा पहचाना जा सकता है। कभी-कभी सुपार्श्वनाथ को एक छोटे साँप-हुड के साथ दिखाया जाता है। प्रतीकों को केंद्र में या मूर्ति की पीठ के कोने में चिह्नित किया गया है। जैन धर्म के संप्रदाय दिगंबर और श्वेतांबर में मूर्तियों के अलग-अलग चित्रण हैं। [3,4]



दिगंबर चित्र किसी अलंकरण के बिना नग्न होते हैं, जबकि श्वेताम्बरों को कपड़े पहनाए जा सकते हैं और पूजा में अस्थायी आभूषणों से सजाया जा सकता है। चित्रों को अक्सर श्रीवत्स छाती पर और तिलका माथे पर चिह्नित किया जाता है। श्रीवत्स अष्टमंगल (शुभ प्रतीकों) में से एक है। यह कुछ हद तक एक बेड़े-डी-लिस, एक अंतहीन गाँठ, एक फूल या हीरे के आकार के प्रतीक की तरह लग सकता है। तीर्थकर प्रतिमाओं के शरीर असाधारण रूप से सुसंगत हैं। ऐतिहासिक रिकॉर्ड के 2,000 से अधिक वर्षों के दौरान। शरीर बहुत छोटे होते हैं, जिनमें बहुत चौड़े कंधे और कमर होती है। भारतीय मूर्तिकला में सामान्य से अधिक है, चित्रण अंतर्निहित मांसलता और हड्डियों के सटीक चित्रण में अपेक्षाकृत कम रुचि लेता है, लेकिन बाहरी सतहों के मॉडलिंग में व्यापक सृजन रूपों के रूप में रुचि रखता है। कान बेहद ऊंचे होते हैं, यह सुझाव देते हैं कि भारी झूमके उनके प्रारंभिक जीवन में पहने गए आंकड़े से पहले उन्होंने आत्मज्ञान की राह पकड़ ली, जब अधिकांश शाही नहीं थे। चार तीर्थकरों के साथ मूर्तियां, या उनके सिर, चार दिशाओं में सामना करते हुए, प्रारंभिक मूर्तिकला में असामान्य नहीं हैं, लेकिन तुलनीय हिंदू छवियों के विपरीत, ये चार अलग-अलग तीर्थकरों का प्रतिनिधित्व करते हैं, एक ही देवता के चार पहलू नहीं। तीर्थकर छवियों में कई अतिरिक्त हथियारों से बचा जाता है, हालांकि उनके परिचारक या अभिभावक उनके पास हो सकते हैं। [5,6]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

विचार - विमर्श

प्रसिद्ध रणकपुर जैन मंदिर 15 वीं शताब्दी में निर्मित [1717] बौद्धों की तरह, जैनियों ने भाग लिया। बहुत प्रारंभिक तिथि से भारतीय रॉक-कट वास्तुकला में। प्राचीन जैन मंदिरों और मठों के मंदिरों के अवशेष पूरे भारत में पाए जा सकते हैं, और बहुत जल्दी जैन मूर्तिकला इन में राहत है। महाराष्ट्र में एलोरा की गुफाएं और माउंट आबू, राजस्थान के पास दिलवाड़ा में जैन मंदिर। चित्तौड़ में जैन टॉवर, राजस्थान जैन वास्तुकला का एक अच्छा उदाहरण है। आधुनिक और मध्ययुगीन जैन ने कई जैन मंदिरों का निर्माण किया, खासकर पश्चिमी भारत में। विशेष रूप से पाँच दिलवाड़ा मंदिरों का परिसर <110 वीं 11 वीं 11 वीं से 13 वीं शताब्दी में माउंट आबू <110> में <110> राजस्थान <110> एक बहुत ही आकर्षण का केंद्र है। गुजरात के पाटीलाना के पास शत्रुंजय पहाड़ियों में जैन तीर्थस्थल को "मंदिरों का शहर" कहा जाता है। ये दोनों परिसर सोलंकी या मारु-गुर्जर वास्तुकला की शैली का उपयोग करते हैं, जो 10 वीं शताब्दी में पश्चिम भारत में हिंदू और जैन दोनों मंदिरों में विकसित हुए, लेकिन जैन संरक्षकों के साथ विशेष रूप से लोकप्रिय हो गए, जिन्होंने इसका उपयोग किया और इसे भारत के कुछ अन्य हिस्सों में फैला दिया। जैन मंदिरों में इसका उपयोग जारी है, जो अब दुनिया भर में है, और हाल ही में हिंदू मंदिरों की लोकप्रियता में फिर से वृद्धि हुई है। [7,8]



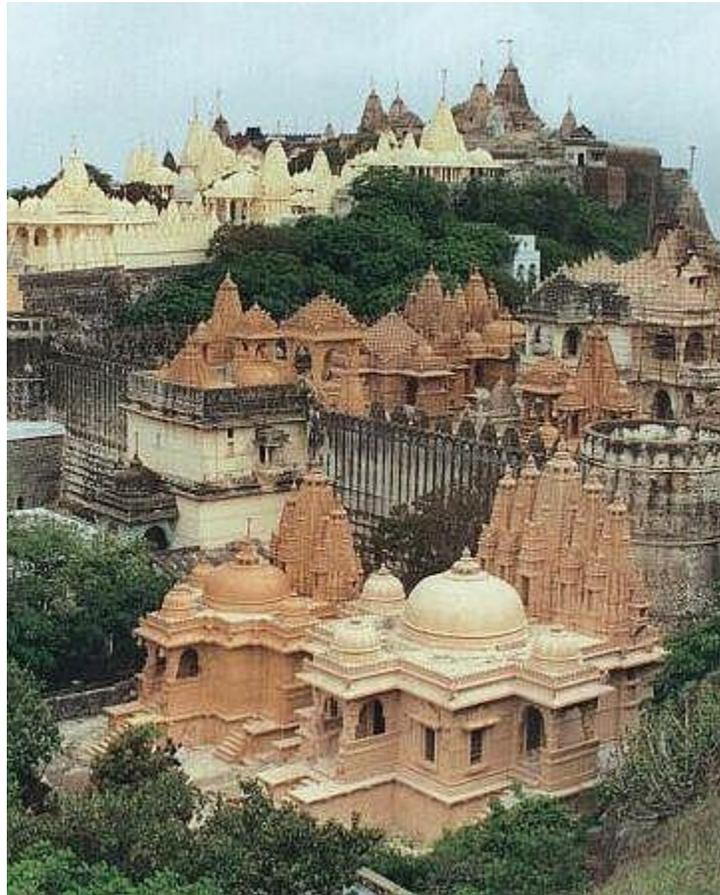
जैन मंदिर या दैसर पूजा स्थल है जैन के अनुयायियों के लिए जैन धर्म जैन वास्तुकला के अनुयायी अनिवार्य रूप से प्रतिबंधित हैं। मंदिरों और मठों, और धर्मनिरपेक्ष जैन भवनों में आमतौर पर उस स्थान और समय की प्रचलित शैली को दर्शाया जाता है जो वे बनाए गए थे। दैसर गुजरात और दक्षिणी राजस्थान में एक जैन मंदिर के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। बासड़ी कर्नाटक में एक जैन मंदिर या मंदिर है। यह शब्द आमतौर पर दक्षिण भारत में उपयोग किया जाता है। उत्तर भारत में इसका ऐतिहासिक उपयोग विमला वसाही और लूना वसाही माउंट आबू के मंदिरों के नाम से संरक्षित है। संस्कृत शब्द वासती है, यह एक संस्थान का अर्थ है जिसमें तीर्थ से जुड़े विद्वानों के निवास शामिल हैं। [9,10]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018



मंदिरों को शिकारी -बंधी जैन मंदिरों में विभाजित किया जा सकता है, आम तौर पर मंदिर भवन, सार्वजनिक रूप से। उच्च अधिरचना, आम तौर पर उत्तर भारतीय शिखर मंदिर के ऊपर का टॉवर) और घर जैन मंदिर, एक निजी जैन गृह मंदिर। एक जैन मंदिर जिसे एक तीर्थस्थल के रूप में जाना जाता है, को अक्सर तीर्थ कहा जाता है। एक जैन मंदिर की मुख्य छवि एक मुल्ला नायक के रूप में जानी जाती है मनस्तंभ (सम्मान का स्तंभ) एक स्तंभ है यह अक्सर जैन मंदिरों के सामने बनाया गया है। इसमें चार 'मूरतिस' हैं अर्थात उस मंदिर के मुख्य देवता के पत्थर की आकृतियाँ। प्रत्येक दिशा का सामना करना पड़ रहा है: उत्तर, पूर्व, दक्षिण और पश्चिम।[11,12]

सिंधु घाटी सभ्यता से विभिन्न मुहरों पर आंकड़े जैन छवियों, नग्न और एक ध्यान मुद्रा में समानता को सहन करते हैं। लोहानीपुर धड़ प्राचीनतम ज्ञात जैन प्रतिमा है (नग्नता और मुद्रा के कारण जैन माना जाता है), और अब पटना संग्रहालय में है। यह भारतीय मानव की सबसे पुरानी स्मारकीय मूर्तियों में से एक है, यदि मानव का पत्थर तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के लिए सही है; यह दूसरी शताब्दी सीई के बारे में हो सकता है। 23 वें तीर्थकर, चित्र, की कांस्य छवियां प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय, मुंबई और पटना संग्रहालय में देखी जा सकती हैं; ये ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के हैं। नक्काशीदार कंकाली टीला सेंटॉर्स एक जैन स्तूप की पूजा के साथ, मथुरा कला, परिचालित 100 बीसीई की, हेलेनिस्टिक दिखा रही है प्रभाव।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

आशय

प्रारंभिक उदयगिरि और खंडगिरि गुफाएं, राजाओं के लिए खुदाई की गई 2 वीं शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान निर्मित कई बारीक और अलंकृत नक्काशीदार गुफाएं हैं खारवेल महामेघवाहन वंश।

चित्राल जैन स्मारक भारत के दक्षिणी भाग में सबसे पहला जैन धर्म है, जो पहली शताब्दी ईसा पूर्व में वापस आया था। चौसा होर्ड भारत में पाए जाने वाले कांस्य के समूह में सबसे पुराना है। कांस्य की विभिन्न तिथियां हैं, शुंगा और गुप्त काल से, (संभवतः) दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से, 6 वीं शताब्दी ईस्वी तक।

गुप्त काल के तहत मथुरा में जैन कला-परंपरा के अनुसार, महावीर की एक चंदन की मूर्ति उनके जीवनकाल के दौरान खुदी हुई थी। बाद में लकड़ी के चित्र बनाने की प्रथा को छोड़ दिया गया, अन्य सामग्रियों को प्रतिस्थापित किया जा रहा था। चौसा होर्ड, अकोटा कांस्य, वसंतगढ़ होर्ड कांस्य जैन आंकड़ों के उत्खनन समूह हैं।[13,14]



5 वीं -9 वीं शताब्दी के बीच जैन कला-बादामी गुफा मंदिर और निर्मित ऐहोल जैन स्मारक चालुक्य <110 द्वारा निर्मित किए गए थे। >7 वीं शताब्दी में शासक, और एलोरा गुफाओं के जैन भाग इसी अवधि के आसपास के हैं। देवगढ़ में जैन मंदिरों के सबसे बड़े समूह की शुरुआत सबसे पहले हुई थी, और सामान्य तौर पर इस अवधि में नए रॉक-कट साइटों की खुदाई बंद हो गई, जैसा कि अन्य दो मुख्य धर्मों में भी हुआ था। इसके बजाय पत्थर से निर्मित मंदिर बनाए गए। जैन गुफाएँ, एलोरा का निर्माण 8 वीं शताब्दी के आसपास हुआ था।

मध्ययुगीन काल (8 वीं -16 वीं शताब्दी)



International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

गोममेश्वर प्रतिमा जैन आकृति बाहुबली [110] को समर्पित है। यह 983 A.D के आसपास बनाया गया था और यह दुनिया की सबसे बड़ी मुक्त खड़ी मूर्तियों में से एक है। सजाई गई पांडुलिपियां जैन पुस्तकालयों में संरक्षित हैं, जिनमें जैन ब्रह्मांड विज्ञान से अरेख हैं। अधिकांश चित्र और चित्रण ऐतिहासिक घटनाओं को दर्शाते हैं, जिन्हें पंच कल्याणक के रूप में जाना जाता है, तीर्थंकर के जीवन से। हांसी होर्ड 8 वीं -9 वीं शताब्दी में वापस कांस्य होर्डिंग है। मूर्तिकला पिछली शताब्दी ईसा पूर्व से जैन परंपरा का हिस्सा रहा है, लेकिन संभवतः ज्यादातर लकड़ी में था, जो जीवित नहीं रहा है। जैन मूर्तिकला के पहले ज्ञात उदाहरण पहली शताब्दी ईसा पूर्व के पत्थर के स्थापत्य हैं, जो मथुरा की कला में मिलते हैं, विशेष रूप से कंकाली किला के जैन टीले से कला का सबसे प्रसिद्ध एकल जैन कार्य गोममेश्वर प्रतिमा, एक अखंड, 18 मीटर की मूर्ति बाहुबली है, जिसे गंगा मंत्री और कमांडर चावंडराय ने 983 के आसपास बनाया है। यह हसन जिले में श्रवणबेलगोला में एक पहाड़ी पर स्थित है कर्नाटक राज्य। इस प्रतिमा को भारत के सात अजूबों में से पहली के रूप में वोट दिया गया था। छोटे कांस्य चित्र शायद घरों में मंदिरों के लिए थे। इनमें से कई मध्ययुगीन संग्रहों की खुदाई की गई है, संभवतः तब जमा किया जाता है जब आबादी युद्धों से भाग जाती है। इनमें वसंतगढ़ होर्ड (1956, 240 टुकड़े), अकोटा कांस्य (1951, 68 टुकड़े, 12 वीं शताब्दी तक), हांसी होर्ड (1982, 58 टुकड़े) शामिल हैं।, 9 वीं शताब्दी तक), और चौसा होर्ड (18 टुकड़े, 6 वीं शताब्दी तक)। चौबीस तीर्थंकरों में से प्रत्येक विशिष्ट प्रतीक के साथ जुड़ा हुआ है, जो ऐसे ग्रंथों में सूचीबद्ध हैं जैसे कि तिलोयपनति, कहवली और प्रवाचनसूरोधरा। जीवन्तस्वामी चित्र भगवान <का प्रतिनिधित्व करते हैं। 112> महावीर (और कुछ मामलों में अन्य तीर्थंकर) एक राजकुमार के रूप में, एक मुकुट और गहने के साथ। जीना का प्रतिनिधित्व क्योटसर्गा मुद्रा में खड़ा है। [15,16]

एक अखंड मनस्तंभ मुदबिद्री के जैन मंदिरों में एक मानक विशेषता है। इनमें संरक्षक यक्ष के रूप में शीर्ष पर ब्रह्मदेव की एक प्रतिमा शामिल है। 58 फीट ऊंची अखंड जैन बाहुबली की प्रतिमा विंध्यगिरि हिल <254 पर स्थित है।> 983 ई। में निर्मित श्रवणबेलगोला 2016 तक सबसे बड़ी मुक्त खड़ी अखंड मूर्ति थी, 108 फीट अखंड मूर्ति अहिंसा की मूर्ति (प्रथम जैन तीर्थंकर की मूर्ति, ऋषभनाथ) को खड़ा किया गया था।

परिणाम

जैन मंदिरों और मठों में कम से कम 2,000 साल पहले से भित्ति चित्र हैं। हालांकि पूर्व-मध्ययुगीन जीवित दुर्लभ हैं। इसके अलावा, कई जैन पांडुलिपियों को चित्रों के साथ चित्रित किया गया था, कभी-कभी भव्य रूप से। इन दोनों मामलों में, जैन कला हिंदू कला को समेटती है, लेकिन जैन उदाहरण जल्द से जल्द जीवित रहने वालों में कई हैं। पांडुलिपियां 11 वीं शताब्दी के आसपास शुरू होती हैं, लेकिन ज्यादातर 13 वीं शताब्दी से हैं, और गुजरात क्षेत्र में बनाई गई थीं।



International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

15 वीं शताब्दी तक वे सोने के अधिक उपयोग के साथ तेजी से भव्य होते जा रहे थे। पांडुलिपि का सबसे अधिक सचित्र पाठ कल्प सूत्र है, जिसमें तीर्थकरों की जीवनी है। 110>, विशेष रूप से पार्श्वनाथ और महावीर। [17,18]
चित्र "वियर ड्राइंग" और "शानदार, यहां तक कि आभूषण जैसा रंग" के साथ, पाठ में सेट वर्ग-ईश पैनल हैं। आंकड़े हमेशा तीन-तिमाहियों में देखे जाते हैं, विशिष्ट "लंबी नुकीली नाक और उभरी हुई आँखें" के साथ। एक अधिवेशन होता है, जिसमें चेहरे के अधिक दूर की ओर फैला होता है, जिससे दोनों आंखों को देखा जाता है। ऋषभ, पहला तीर्थकर, आमतौर पर <67 "कमल की स्थिति या kayotsarga में चित्रित किया गया है। खड़े होने की स्थिति। वह अपने कंधों से गिरते बालों के लंबे तालों से अन्य तीर्थकरों से अलग है। उनकी मूर्तियों में बुल चित्र भी दिखाई देते हैं। चित्रों में, उनके जीवन की घटनाओं, जैसे उनकी शादी और इंद्र के माथे को चिह्नित करते हुए दर्शाया गया है। अन्य पेंटिंग उसे अपने अनुयायियों को मिट्टी के बर्तनों को प्रस्तुत करते हुए दिखाती हैं; वह अपनी मां मरुदेवी द्वारा घर में पेंट करते हुए, बुनाई करते हुए और जाते हुए भी देखे जा रहे हैं।



समवसरण का चित्रण, तीर्थकर का दिव्य उपदेश हॉल।>, जैन कला में एक लोकप्रिय विषय है। समवसरण को तीर्थकर के आकार में वृत्ताकार के रूप में चित्रित किया गया है, बिना किसी सिंहासन पर बैठे (लगभग दो इंच ऊपर)। तीर्थकर के आस-पास गणधर (मुख्य शिष्य) और प्रत्येक जीवित प्राणी विभिन्न हॉल में बैठते हैं। [19,20]
स्वस्तिक एक महत्वपूर्ण जैन प्रतीक है। इसकी चार भुजाएँ अस्तित्व के चार लोकों का प्रतीक हैं जिनमें जैन धर्म के अनुसार पुनर्जन्म होता है: मनुष्य, स्वर्गीय प्राणी, नारकीय प्राणी और गैर-मनुष्य (पौधे और जानवर)। यह वैचारिक रूप से बौद्ध धर्म में भावचक्र द्वारा पुनर्जन्म के छह लोकों के समान है। यह आमतौर पर शीर्ष पर तीन बिंदुओं के साथ दिखाया जाता है, जो कि प्राचीन ग्रंथों में वर्णित तीन रत्नों जैसे कि ततवार्थ सूत्र और उत्तराध्याय सूत्र: सही विश्वास, सही समझ और सही आचरण का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये गहने जैन धर्म में आध्यात्मिक पूर्णता की स्थिति के लिए नेतृत्व करने के लिए विश्वास किए गए साधन हैं, एक राज्य जो प्रतीकात्मक रूप से एक वर्धमान और एक डॉट द्वारा शीर्ष आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है। हाथ पहिया पर एक पहिया के साथ। [21]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

निष्कर्ष



हथेली का प्रतीक जैन धर्म में अहिंसा है जो मध्य में लिखा गया है। पहिया धर्मचक्र (धर्म का पहिया) का प्रतिनिधित्व करता है, जो अहिंसा (करुणा) के अथक खोज के माध्यम से सासरा (भटकने) को रोकने के संकल्प के लिए खड़ा है। जैन धर्म में, ओम को उनके प्रारंभिक A + A + A + U + M (o 3 m) द्वारा, Paca-Parame theirhi के संदर्भ का एक घनीभूत रूप माना जाता है। आचार्य <२४४>द्रव्यसम्प्रज्ञ <११०>के अनुसार आचार्य <२४ >नेमिचंद्र <११०>, एएयूएम (या सिर्फ ओम) पांच परमेष्ठियों के आरंभिक अक्षरों का एक शब्दांश संक्षिप्त रूप है: "अरिहंत, <>२>आशिरी <११०।, आचार्य, उपाध्याय, मुनि"। ओम प्रतीक का उपयोग प्राचीन जैन धर्मग्रंथों में ००००AMara मंत्र की पांच पंक्तियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए किया जाता है। 1974 में, महावीर की निर्वाण की 2500 वीं वर्षगांठ पर, जैन ने एक छवि को प्रतीक के रूप में चुना। जैन धर्म के लिए मुख्य पहचान चिन्ह। समग्र आकृति में जैन ब्रह्माण्ड विज्ञान यानी स्वर्ग, मानव संसार और नरक के तीन लोका (पुनर्जन्म के क्षेत्र) को दर्शाया गया है। अर्ध-वृत्ताकार सबसे ऊपरी भाग सिद्धशिला का प्रतीक है, जो तीन लोकों से परे एक क्षेत्र है। जैन स्वस्तिक शीर्ष भाग में मौजूद है, और निचले हिस्से में अहिंसा का प्रतीक है। प्रतीक के निचले भाग में जैन मंत्र है, परसोप्रोपाग्राहो जिवान्म । विलास सांगवे के अनुसार, मंत्र का अर्थ है "सभी जीवन परस्पर समर्थन और अन्योन्याश्रितता से एक साथ बंधे हुए हैं"। ऐनी वैलेली के अनुसार, यह मंत्र उमास्वाति के तत्त्वार्थसंग्रह के सूत्र 5.21 से है, और इसका अर्थ है "आत्माएं एक दूसरे को सेवा प्रदान करती हैं"। जैन ध्वज के पांच रंग <243 का प्रतिनिधित्व करते हैं।>पनेका-परमेष्ठी और पांच प्रतिज्ञाएँ, छोटी और साथ ही महान: अष्टमंगला आठ शुभ प्रतीकों का एक सेट है, जो दिगंबर और Śvētāmbar परंपराओं में भिन्न हैं। दिगंबर परंपरा में, आठ शुभ प्रतीक हैं चतरा , 49> ध्वाजा , कलशा , उड़-व्हिस्क , आईना , अध्यक्ष , हाथ प्रशंसक और पोत। Āv thetāmbar परंपरा में, ये हैं स्वस्तिक , श्रीवत्स , नंदवर्त , वर्धमानका (भोजन पात्र) , भद्रासन (सीट) , कलशा (बर्तन) , दर्पण (दर्पण) और मछली की जोड़ी।[20,21]

संदर्भ

1. गाय, जॉन (जनवरी 2012), जैन पांडुलिपि चित्रकला , कला इतिहास की हीलब्रून टाइमलाइन। न्यूयॉर्क: कला का महानगर संग्रहालय
2. हारले, जेसी (1994), भारतीय उपमहाद्वीप की कला और वास्तुकला (2 संस्करण), येलीन प्रेस । , आईएसबीएन 0300062176 Alt URL
3. कुमार, सहदेव (2001), राजस्थान के जैन मंदिर , अभिनव प्रकाशन, आईएसबीएन 978-81-7017-348-9
4. परेरा, जोस (1977), अखंड जिनस , मोतीलाल बनारसीदास , आईएसबीएन >978-81-208-2397-6
5. क्विटनिला, सोन्या राई (2000), ""yāgapātas: अभिलक्षण, प्रतीकवाद और कालानुक्रम", आर्टिबस एशेज, 60 (1): 79-137, doi : 10.2307 / 324994 , JSTOR 3249941

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Website: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 6, June 2018

6. सेटर, एस। (1971), "द ब्रम्हदेव स्तम्भ। एक उत्पत्ति की जांच। और दिगंबर जैनियों के बीच ब्रह्मदेव की पूजा की प्रकृति ", आर्टिबस एशेज, 33 (1/2): 17-38, doi : 10.2307 / 3249787 , JSTOR 3249787
7. रोलैंड, बेंजामिन (1967), भारत की कला और वास्तुकला: बौद्ध, हिंदू, जैन (3 संस्करण), पेलिकन कला का इतिहास, पेंगुइन, आईएसबीएन 0140561021
8. घुरे, जीएस (2005), राजपूत वास्तुकला , लोकप्रिय प्रकाशन, आईएसबीएन 9788171544462
9. क्विटानिला, सोन्या राई (2007), मथुरा में प्रारंभिक पत्थर की मूर्तिकला का इतिहास: सी। 150 BCE - 100 CE , BRILL, पीपी। छवि 21 और 22, ISBN 9789004155374
10. Cort, John E. (2010), Framing जीना: जैन इतिहास में प्रतीक और मूर्तियों की कथाएँ , ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आईएसबीएन 978-0-19-538502-1
11. भार्गव, गोपाल के (2006)। भारतीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की भूमि और लोग: 36 खंडों में। उड़ीसा, खंड 21 । ज्ञान प्रकाशन हाउस। आईएसबीएन 9788178353777 .
12. कृष्ण, युवराज; तड़ीकोंडा, कल्पना के। (1996), द बुद्धा इमेज: इट्स ओरिजिन एंड डेवलपमेंट , भारतीय विद्या भवन, आईएसबीएन 9788121505659 [401>अरोड़ा, उदय प्रकाश (2007), उदयन , अनामिका पब और डिस्ट्रीब्यूटर्स, आईएसबीएन 9788179751688
13. जिमर, हेनरिक (1953) (अप्रैल 1952) कैम्पबेल, जोसेफ (एड।), भारत के दर्शन , लंदन , ईसी 4: रूटलेज और केगन पॉल लिमिटेड, आईएसबीएन 978- 81-208-0739-6 सीएस 1 मुख्य: स्थान
14. ओवेन, लिसा (2012), एलोरा , जैन शैक्षणिक गुफाओं में जैन गुफाओं में भक्ति की नक्काशी, आईएसबीएन 978-90-04-20630-4
15. शाह, उमाकांत प्रेमानंद (1995), डॉ। के सम्मान में जैन आर्ट एंड आइकोनोग्राफी एंड एलाइड सबजेक्ट्स में अध्ययन यूपी शाह , अभिनव प्रकाशन, आईएसबीएन 9788170173168
16. शाह, उमाकांत प्रेमानंद (1987), जैना-रप्पा-मयाना: जैना आइकोनोग्राफी , अभिनव प्रकाशन, आईएसबीएन 978-81-7017-208-6
17. जैन, ज्योतिंद्र ; फिशर, एबरहार्ड (1978), जैना आइकोनोग्राफी , 12, ब्रिल , आईएसबीएन 9789004052598 <406 "श्रीनिवासन, डोरिस (1997), भारतीय कला में कई प्रमुख, हथियार और आंखें: उत्पत्ति, अर्थ, और रूप का गुण , BRILL, ISBN 9789004107588
18. विली, क्रिस्टी एल (2009), ए टू जेड ऑफ़ जैन धर्म , स्केयरक्रो प्रेस, आईएसबीएन 9780810868212
19. "बागवती मंदिर (चित्रल)" । त्रिशूर सर्कल, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण । 19 मार्च 2016 को मूल से संग्रहीत। 23 मार्च 2017 को लिया गया।
20. "108-फीट टाल जैन तीर्थंकर आइडल 'गिनीज रिकॉर्ड्स" । एनडीटीवी । 6 मार्च 2016.
21. "डेलिगेट्स .ravaṇa Belgo 110a" पर इतिहास के एक टुकड़े का आनंद लेते हैं। द हिंदू । चेन्नई । स्टाफ कॉर्रेस्पोंडेंट। 1 जनवरी 2006.